

डॉ. एंथनी जे. टोमासिनो, टेन कमांडमेंट्स, सत्र 7, हत्या मत करो

यह डॉ. एंथनी जे. टोमासिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, आज्ञा 6: हत्या न करें।

छठी आज्ञा पर, आपको हत्या नहीं करनी चाहिए।

अब, हम में से ज्यादातर लोग शायद एच.जी. वेल्स के नाम से परिचित होंगे, और शायद वे उनकी कुछ रचनाओं से भी परिचित होंगे। उनकी कुछ कहानियाँ बहुत ही लोकप्रिय फ़िल्में बन चुकी हैं, जैसे, आप जानते हैं, द वार ऑफ़ द वर्ल्ड, टाइम मशीन और थिंग्स टू कम, वार ऑफ़ द वर्ल्ड्स, बेशक, अब कई बार फ़िल्मों में रीमेक की गई हैं। लेकिन मेरे हिसाब से, एच.जी. वेल्स की सबसे डरावनी रचनाओं में से एक उनकी एक कहानी थी, जिसका शीर्षक था द आइलैंड ऑफ़ डॉ. मोरो।

और यहाँ कहानी का एक छोटा सा हिस्सा यह है कि एक वैज्ञानिक एक उष्णकटिबंधीय द्वीप पर काम कर रहा है। और वह जो कर रहा है वह यह है कि वह कुछ महत्वाकांक्षी प्रयोग कर रहा है। वह जानवरों को इंसानों में बदलने की कोशिश कर रहा है।

और उनकी कृतियाँ लगभग इंसानों जैसी दिखती हैं। वे सीधे चलते हैं। वे ज्यादातर इंसानों की तरह ही बात करते हैं।

लेकिन उनमें से हर एक में, उन सभी में जानवर का थोड़ा सा अंश रहता है। ये मानव पशु, जैसा कि वह उन्हें कहते हैं, सभी द्वीप पर एक परिसर में एक साथ रहते हैं। और वे अपने कानून निर्माता द्वारा शासित होते हैं, जो मूल रूप से एक बकरी थी, जिसे अब एक कानून निर्माता में बदल दिया गया है, जो एक तरह से मूसा की आकृति है, आप जानते हैं।

लेकिन नेता लगातार इन मानव-पशुओं को ईश्वर की इच्छा के बारे में याद दिला रहे हैं, जैसा कि डॉ. मोरो के माध्यम से उन्हें दिया गया था। और मानव पशुओं के बीच सबसे महत्वपूर्ण नियम है, तुम हत्या नहीं करोगे। और अगर कोई मानव पशु उस नियम को तोड़ता है, तो बाकी सभी मानव पशु उन पर हमला करेंगे और बदले में उन्हें मार देंगे।

इसलिए अगर कोई जानवर वापस जानवर की तरह व्यवहार करने लगे, जो कि दुर्भाग्य से अक्सर होता था, तो उन्हें भी मार दिया जाता था। और इस तरह मौत का एक अजीब जाल बन गया, आप जानते हैं। हालाँकि उन्हें लगता था कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी को मारना नहीं है, लेकिन साथ ही, वे तुरंत किसी भी ऐसे व्यक्ति को खत्म कर देते थे जो उनके किसी भी अन्य कानून को तोड़ता था, जो लोगों की तरह व्यवहार करने से संबंधित था।

तो, वेल्स की कहानी के बारे में सबसे परेशान करने वाली बात यह है कि यह स्पष्ट है कि वेल्स यहाँ सिर्फ जानवरों के बारे में बात नहीं कर रहे थे। और वह सिर्फ एक काल्पनिक कहानी बुनने की कोशिश नहीं कर रहे थे। वह मानव स्वभाव पर भी टिप्पणी कर रहे थे।

अब, वेल्स इस कहानी में जो कह रहे थे, और जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह अजीब लगता है, क्योंकि वेल्स एक मानवतावादी होने के लिए जाने जाते थे, किसी व्यक्ति होने के लिए, वह नहीं थे, वह ईसाई नहीं थे। वह धार्मिक नहीं थे। वह एक मानवतावादी थे।

और फिर भी इस कहानी में, वह हमें वास्तव में यह बता रहा है कि भले ही हम सीधे चलते हों, भले ही हम ईश्वर के बारे में बात करते हों और भाषा और इस तरह की सभी चीज़ों का इस्तेमाल करते हों, लेकिन जो चीज़ इंसानों को जानवरों से अलग करती है, वह है कानून। हमारे पास जो नियम हैं, वे हममें से हर एक के अंदर छिपे जानवर को नियंत्रित करते हैं, आप जानते हैं। एक बहाना और अवसर मिलने पर, हम सभी जानवरों की तरह हो जाएँगे, शिकार करेंगे और अपने ही जानवरों को मार डालेंगे।

"इसलिए कानून ही हमें अनुशासन में रखते हैं। लेकिन कानून के बिना हम जानवरों से ज़्यादा कुछ नहीं हैं।" यह मानवीय स्थिति का एक तरह से निराशाजनक मूल्यांकन है।

लेकिन आप कह सकते हैं कि इसके पक्ष में थोड़ा सा सबूत है, क्योंकि अगर आप कभी समाचार देखते हैं, तो आपको पता चलता है कि जब एक-दूसरे के साथ सभ्य व्यवहार करने की बात आती है, तो इंसानों का रिकॉर्ड काफी खराब लगता है। और फिर भी बाइबल इस बात पर जोर देती है कि इंसान सिर्फ जानवर नहीं हैं जो दो पैरों पर चलते हैं और कुछ और होने का दिखावा करते हैं। बाइबल इस बात पर जोर देती है कि हम कुछ और हैं, कि हमारे अंदर एक दिव्य प्रकृति है, कि हम किसी तरह ईश्वर की छवि को दर्शाते हैं।

और यही कारण है कि हमें यह आदेश दिया गया है, तुम हत्या नहीं करोगे। अब, जहाँ तक हत्या के बारे में नियमों की उत्पत्ति का सवाल है, तो हम शायद ऐतिहासिक रूप से मानव समाज और सभ्यता की शुरुआत में वापस जा सकते हैं। जैसे ही लोग समूहों में एक साथ रहना शुरू करते हैं, उन्हें यह तय करना होता है कि वे किसे मार सकते हैं और किसे नहीं।

तो आप आज हमारी दुनिया के सबसे आदिम समाजों को देख सकते हैं, और उनमें इस बारे में नियम होंगे कि किसे मारा जा सकता है और कौन किसको मार सकता है। उर-नाम्मू, सुमेर का कानून कोड लगभग 2050 ईसा पूर्व, उर-नाम्मू के कोड में सबसे पहला कानून कहता है, अगर कोई आदमी हत्या करता है, तो उस आदमी को मार दिया जाएगा। सरल, आसान।

वैसे, पॉप क्लिज़, अपोडिक्टिक या कैसुइस्टिक? कैसुइस्टिक, बेशक, है न? 1750 ईसा पूर्व से हम्मुराबी का कानून कोड। हत्या के बारे में कोई विशेष कानून नहीं है, और फिर भी कई अन्य कानूनों के तहत एक धारणा है कि हत्या एक मृत्युदंड योग्य अपराध है, कि हत्या करने वालों को मौत की सजा दी जाएगी। मध्य असीरियन कानून कोड, 1450 से 1250, हत्या के लिए दंड निर्दिष्ट

नहीं करता है, लेकिन फिर से, एक धारणा प्रतीत होती है कि हत्यारों को मौत की सजा दी जाएगी।

इसलिए मानव समाज में, प्राचीन कानूनों के माध्यम से चलने वाली एक आम धारा कहती है कि हत्यारों को मार दिया जाना चाहिए। अब, ऐसी कुछ परिस्थितियाँ हो सकती हैं जहाँ यह मान लिया जाएगा कि हत्या उचित हो सकती है, जैसे कि कोई व्यक्ति, आप जानते हैं, आखिरी डोनट ले लेता है, उदाहरण के लिए। लेकिन प्राचीन निकट पूर्वी कानून संहिताओं में, इस बारे में कुछ धारणाएँ थीं कि किन परिस्थितियों में हत्या को उचित ठहराया जा सकता है।

उनमें से एक, बेशक, युद्ध है। यदि आप किसी और के साथ युद्ध में हैं, तो आपसे न केवल अपेक्षा की जाती है, बल्कि आपको हत्या करने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाता है। न्यायिक अधिकारियों द्वारा निष्पादन किया जाता है।

कभी-कभी इन मामलों में, ज़िम्मेदारी पीड़ित लोगों पर छोड़ दी जाती थी। यहाँ हम खून के झगड़े जैसी चीज़ों से जुड़े सवाल पर आते हैं, जहाँ अगर किसी ने आपके भाई को मार दिया है, तो आपको न केवल उस व्यक्ति को मारने का अधिकार है, बल्कि यह आपकी ज़िम्मेदारी भी है कि आप अपने भाई का बदला लें। ऐसी स्थिति में, हत्या को उचित माना जाता था।

हत्या के अलावा कई अन्य अपराधों के लिए भी मृत्युदंड का प्रावधान था। और हमने दस आज्ञाओं में से कुछ में इसे पहले ही देखा है। अगर कोई बच्चा लगातार अपने माता-पिता पर गुस्सा करता है या, भगवान न करे, अपने माता-पिता पर हमला करता है, तो उसे मौत की सज़ा दी जानी चाहिए।

कई प्राचीन कानून संहिताओं में, संपत्ति से जुड़े अपराधों के लिए भी मृत्युदंड का प्रावधान था। तो, हाँ, चोरी करना, यह सब कुछ हद तक इस बात पर निर्भर करता था कि आपने किससे चोरी की है। अगर आपने किसी मंदिर से चोरी की, तो आपकी जान चली जाती थी।

निम्न वर्ग का व्यक्ति, उच्च वर्ग के व्यक्ति से चोरी करता है, तो संभवतः वह अपना एक हाथ खो देगा। लेकिन आम तौर पर, संपत्ति अपराधों को अनिवार्य रूप से मृत्युदंड योग्य अपराध नहीं माना जाता था। व्यक्तिगत चोट के लिए प्रतिशोध, जैसे कि यदि किसी ने आपकी पत्नी को बहकाया है, तो कई कानून संहिताओं के अनुसार, आप उसे और अपनी पत्नी को भी मौत की सज़ा सुना सकते हैं।

आम तौर पर, प्राचीन कानून संहिताओं में यहाँ एक तरह का संतुलन था। आप जानते हैं, अगर आप यह आदेश नहीं दे सकते कि आपकी पत्नी को गुलाम के रूप में बेचा जाए और उसके साथ व्यभिचार करने वाले व्यक्ति को मार दिया जाए। अगर आप अपनी पत्नी चाहते हैं, अगर आपकी पत्नी को मौत की सज़ा दी जाती है, तो उस व्यक्ति को मौत की सज़ा दी जाएगी।

अगर आपकी पत्नी की नाक कट गई है, तो वे उस आदमी की नाक भी काट देंगे। और व्यभिचार के मामले में बहुत ज़्यादा लचीलापन था। जिस तरह से इसे लिखा गया था, वह आमतौर पर यह

कहकर शुरू होता है कि अगर किसी आदमी की पत्नी किसी पड़ोसी के साथ व्यभिचार करती है, तो वे दोनों मर जाएंगे।

लेकिन अगर पति नहीं चाहता कि उसकी पत्नी मर जाए, तो ये कुछ चीजें हैं जो आप कर सकते हैं। तो सबसे पहले यही है, और मेरा मानना है कि कभी-कभी बाइबिल के नियमों में भी यही होता है। सबसे पहले, वे पूर्ण सिद्धांत बताते हैं, लेकिन फिर एक उम्मीद है कि अपवाद बनाए जाएंगे।

खून का बदला, मैंने पहले ही उल्लेख किया है, इसलिए हमें उस पर फिर से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए यहाँ बहुत सारी संभावनाएँ हैं। बहुत सारे मामले जहाँ हत्या को उचित माना जाता था।

तो, नहीं, तुम हत्या नहीं करोगे, यह स्पष्ट रूप से सभी हत्याओं की निंदा नहीं है। इसलिए, दूसरी ओर, मनुष्यों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने पड़ोसियों को अंधाधुंध तरीके से न मारें। ऐसी धारणा थी कि आप लोगों की हत्या यूँ ही नहीं कर सकते।

और उस धारणा को कहने की भी ज़रूरत नहीं थी। उस पर बहस करने की भी ज़रूरत नहीं थी। उसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की भी ज़रूरत नहीं थी।

ऐसी धारणा थी कि किसी भी सुव्यवस्थित समाज में, आप लोगों को यूँ ही नहीं मार देते। अब, इजराइल, बेशक, प्राचीन निकट पूर्वी संस्कृति का हिस्सा था। वे उस पूरी दुनिया का हिस्सा हैं जिसमें इस तरह के कानून और मूल्य समाज का आधार थे।

और इसलिए हम इस्राएल और बाइबिल के नियमों के बीच कुछ समानता की उम्मीद कर सकते हैं, और वे उनके पड़ोसी हैं। लेकिन साथ ही, कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण अंतर भी हैं। हम कह सकते हैं कि हिब्रू लोग अपने कुछ प्राचीन निकट पूर्वी पड़ोसियों की तुलना में एक अलग नस्ल के पक्षी थे।

तो चलिए इस बात पर गौर करें, तुम हत्या नहीं करोगे, या कभी-कभी आधुनिक अनुवादों में इसका मतलब है, तुम हत्या नहीं करोगे। यहाँ हिब्रू क्रिया है रत्ज़ाच। रत्ज़ाच हिब्रू में हत्या के लिए आम शब्द नहीं है।

हत्या के लिए आम शब्द जिसे हर हिब्रू छात्र एक के बाद एक प्रतिमान में सीखता है, वह है कताल, जो हमें रुग्ण लगता है जब हम अपने प्रतिमान को पढ़ते और दोहराते हैं। कताल, वगैरह, वगैरह। और फिर हम सोचते हैं, ओह, एक मिनट रुकिए, हम इन सभी लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो यह सब हत्या कर रहे हैं।

यह हत्या के लिए आम शब्द है। लेकिन रत्ज़ाच एक अलग शब्द है। रत्ज़ाच के कुछ अलग तरह के अर्थ हैं।

सबसे पहले, रैटज़ाच का इस्तेमाल सिर्फ़ लोगों को मारने के लिए किया जाता है। तो नहीं, आपको किसी को नहीं मारना चाहिए वाली आज्ञा का शाकाहारी होने से कोई लेना-देना नहीं है। सच में, आओ, लोग, उन बिलबोर्ड को हटाओ।

यह हत्या या हत्या के व्यक्तिगत कृत्यों को संदर्भित करता है। इसका इस्तेमाल युद्ध में हत्या के लिए कभी नहीं किया जाता है। आम तौर पर, युद्ध में किसी को मारने के लिए शब्द का इस्तेमाल उन्हें मारना होता है।

इसका इस्तेमाल कभी भी आधिकारिक तौर पर फांसी की सज़ा के लिए नहीं किया जाता है। इसका इस्तेमाल सिर्फ़ हत्या या कभी-कभी हत्या के लिए किया जाता है। तो, इन दो शब्दों से थोड़ा आगे देखें तो, आप जानते हैं कि, लो रज़ाच, हत्या नहीं करते हैं।

बाइबल इस बारे में और भी बहुत कुछ कहती है। और हमेशा की तरह, हम देखते हैं कि ये आज्ञाएँ बाद में पेंटाटेच और बाद की बाइबिल पुस्तकों में भी भरी गई हैं। यहाँ निर्गमन की पुस्तक के अध्याय 21 में, हमें उसी तरह के कानून का एक आकस्मिक सूत्रीकरण मिलता है।

जो कोई भी किसी व्यक्ति पर जानलेवा हमला करता है, उसे मौत की सज़ा दी जानी चाहिए। ठीक है। लड़के, यह उर नामू जैसा लगता है, है न? हालाँकि, अगर यह जानबूझकर नहीं किया गया है, लेकिन भगवान ने ऐसा होने दिया है, तो उन्हें उस जगह भाग जाना चाहिए जिसे मैं निर्दिष्ट करूँगा।

यह शरण नगरों की प्रत्याशा है, जिसके बारे में बाद में विस्तार से बताया जाएगा। लेकिन अगर कोई व्यक्ति किसी की हत्या करने की योजना बनाता है, तो उसे मेरी वेदी से दूर ले जाया जाएगा और उसे मौत के घाट उतार दिया जाएगा। इसलिए यह एक ऐसा अंतर है जिसे हम आज भी कानून में जानबूझकर की गई मौत और आकस्मिक मौत के बीच करते हैं।

दुर्घटनावश हुई मौत पर सज़ा नहीं दी जाती थी, क्योंकि भगवान ने ऐसा होने दिया था। वाह। धार्मिक दृष्टि से, इससे निपटना मुश्किल है।

नैतिकतावादियों और धर्मशास्त्रियों पर छोड़ देंगे। लेविटिकस, ऐसा कुछ मत करो जिससे तुम्हारे पड़ोसी की जान को खतरा हो। मैं प्रभु हूँ।

लोगों में से किसी से बदला न लेना, और न उसके विरुद्ध बैर रखना, परन्तु अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।

मैं प्रभु हूँ। तो यहाँ हमारे पास इस तरह की बात का अधिक सकारात्मक सूत्रीकरण है। बदला लेने की बजाय, द्वेष रखने की बजाय, अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम करो जैसा तुम अपने आप से करते हो, जैसा प्रभु कहते हैं।

तो आगे, गिनती की किताब में थोड़ा और, यहाँ हत्या के बारे में थोड़ा और। अगर कोई किसी को लोहे की वस्तु से घातक चोट पहुँचाता है, तो वह व्यक्ति हत्यारा है। वही शब्द जो हमने दस आज़ाओं में इस्तेमाल किया था।

हत्यारे को मौत की सज़ा दी जानी चाहिए। या अगर कोई व्यक्ति पत्थर पकड़कर किसी पर जानलेवा हमला करता है, तो वह व्यक्ति हत्यारा है। हत्यारे को मौत की सज़ा दी जानी चाहिए।

या अगर कोई व्यक्ति लकड़ी की वस्तु पकड़कर किसी पर जानलेवा हमला करता है, तो वह व्यक्ति हत्यारा है। हत्यारे को मौत की सज़ा दी जानी चाहिए। मेरा मानना है कि अगर आपके पास बहुत भारी पंख है और आप उससे किसी को मारते हैं और वह मर जाता है, तो आप हत्यारा होंगे और आपको मौत की सज़ा दी जाएगी।

खून का बदला लेने वाला हत्यारे को मौत की सज़ा देगा। इसलिए, अगर किसी ने आपके भाई को मार दिया है, तो वे खून के दोषी हैं, आप जानते हैं, और खून का बदला लेने की ज़िम्मेदारी आपकी है। जब बदला लेने वाला हत्यारे पर हमला करता है, तो बदला लेने वाला हत्यारे को मौत की सज़ा देगा।

अगर कोई व्यक्ति द्वेष के कारण किसी दूसरे व्यक्ति को धक्का देता है या जानबूझकर उस पर कुछ फेंकता है जिससे वह मर जाता है, या अगर दुश्मनी के कारण कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को मुक्का मारता है जिससे दूसरा व्यक्ति मर जाता है, तो उस व्यक्ति को मौत की सज़ा दी जानी चाहिए। वह व्यक्ति हत्यारा है। खून का बदला लेने वाला उस हत्यारे को मौत की सज़ा देगा जब वह दोनों एक साथ मिलेंगे।

यहाँ एक दिलचस्प बात है, बेशक, यहाँ ध्यान देने योग्य कुछ दिलचस्प बिंदु यह है कि यहाँ वर्ग के बारे में कोई भेद नहीं है। आप जानते हैं, कुछ अन्य प्राचीन कानून संहिताओं में, आप किसको मारते हैं, इसमें बहुत अंतर होता था। इसलिए, यदि कोई गुलाम किसी दूसरे गुलाम को मार देता है, तो, आप जानते हैं, आपको गुलाम को संपत्ति के नुकसान की भरपाई करनी पड़ सकती है।

अगर कोई कुलीन व्यक्ति किसी किसान को मार देता है, तो शायद आपको जुर्माना भरना पड़ेगा, आप जानते हैं। लेकिन यहाँ यह सरल है कि अगर किसी व्यक्ति ने किसी व्यक्ति को मार दिया है, तो यहाँ प्रस्तुत कानूनों के तहत सभी जीवन को समान मूल्य का माना जाता है। तो यह दिलचस्प चीजों में से एक है।

यहाँ दूसरी दिलचस्प बात यह है कि समुदाय को निर्णय निष्पादित करने के लिए नहीं बुलाया जा रहा है। बल्कि, निर्णय को खून के बदला लेने वाले पर छोड़ दिया जा रहा है। निस्संदेह, यह एक ऐसी स्थिति है जो पहले से ही यहाँ मौजूद थी, और कानून उन कार्यों को नियंत्रित कर रहा है जो होने वाले हैं।

शरण नगर की पूरी बात के पीछे यह एक बड़ी बात है। हमने पहले ही इस बारे में बात की है, इसका उल्लेख किया है। आप जानते हैं, अगर किसी ने गलती से किसी को मार दिया है, पुराने नियम के अनुसार, अगर यह निर्धारित किया गया था कि यह एक दुर्घटना थी, तो वे किसी ऐसे

शहर में भाग सकते थे जहाँ वे होंगे, और वे खून के बदला लेने वाले के खिलाफ शरण ले सकते थे।

लेना उनकी जिम्मेदारी है, भले ही यह एक दुर्घटना थी, क्योंकि खून के अपराध की भावना थी। इसलिए, उन दिनों में बहुत अधिक क्षमा नहीं होती थी। बहुत से लोग यह नहीं कहते थे कि, ओह, यह तो बस एक दुर्घटना थी।

आप जानते हैं, यह सोचने की प्रवृत्ति थी कि हमारे पास अपने मृत रिश्तेदार के लिए बदला लेने की जिम्मेदारी है। और इसलिए, ज़ाहिर है, यह हिंसा के बहुत लंबे, निरंतर चक्रों का परिणाम हो सकता है और साथ ही मैं गलती से जो को मार देता हूँ। जो का भाई आता है और मुझे मार देता है।

खैर, फिर मेरे भाई को लगता है कि उसे मुझसे बदला लेना है। इसलिए वह जाकर अपने एक भाई को मार देता है। और फिर यह सिलसिला आगे-पीछे चलता रहता है।

और फिर आपके पास एक झगड़ा चल रहा है। और यह खून का झगड़ा तब तक जारी रह सकता है जब तक कि बड़े परिवार इसमें शामिल न हो जाएं। और आपके पास हैटफील्ड्स और मैककॉय हैं, जो एक दूसरे को खत्म कर रहे हैं।

इसलिए, यही कारण है कि बाइबल ने इस पूरी बात को जड़ से खत्म कर दिया, यह कहकर कि, सबसे पहले, हत्या कोई मृत्युदंड योग्य अपराध नहीं है। अगर कोई गलती से किसी को मार देता है, तो उसे जीने दिया जाना चाहिए। और इन शरण शहरों के साथ इस प्रणाली की स्थापना की, जहाँ लोग इन शहरों में जा सकते थे, और उनकी रक्षा की जाती थी।

और वे खून का बदला लेने वाले व्यक्ति के खिलाफ सुरक्षित रहेंगे। तो, हम हत्या को क्या मानते हैं? ज़ाहिर है, जानबूझकर किसी को बिना किसी उचित प्रक्रिया या सामाजिक स्वीकृति के जीवन से वंचित करना। दुर्भावना और पूर्वविचार परिभाषा के आवश्यक पहलू हैं।

हत्या का मतलब है रवैया। आप किसी को मारने के बारे में सोच रहे हैं। आप उन्हें मारने की योजना बनाते हैं, आप उन्हें मार देते हैं।

बेशक, ऐसे मामले भी हैं जहाँ लोग लड़ रहे हैं, और फिर कोई व्यक्ति किसी दूसरे को मार देता है। इसे भी हत्या माना जा सकता है। लेकिन बाइबल द्वेष की इस धारणा और योजना की इस धारणा पर ज़ोर देती है।

एक बार फिर, यह वही विचार है जो आधुनिक न्यायशास्त्र में हमारे पास है। हमारे पास प्रथम-डिग्री हत्या है, जिसमें दुर्भावना और पूर्व-विचार शामिल है, और दूसरी-डिग्री हत्या, जो एक तरह से क्षणिक आवेग वाली बात है, इत्यादि। और एक को दूसरे जितना गंभीर नहीं माना जाता है।

बेशक, पीड़ित के लिए यह उतना ही गंभीर है, लेकिन कानून की अदालतों के लिए, शायद इसे उतना गंभीर नहीं माना जाता। मैं अपने पड़ोसी को क्यों नहीं मार सकता? क्या होगा अगर वे

इसके लायक हैं? अन्य प्राचीन निकट पूर्वी समाजों के साहित्य के विपरीत, बाइबल वास्तव में हमें बताती है कि हम अपने भाई या बहन को क्यों नहीं मार सकते। उर-नाम्मू की संहिता में, यह एक धारणा है।

किसी दूसरे व्यक्ति की हत्या मत करो। हम्मुराबी के नियमों के अनुसार, आपको किसी व्यक्ति या कम से कम कुछ लोगों की हत्या करने की अनुमति नहीं है। मध्य असीरियन कानून संहिता में भी यही बात है।

लेकिन क्यों? क्या हमें सिर्फ एक-दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए, या यह सब समाज के बारे में है, एक न्यायपूर्ण समाज को बनाए रखने के बारे में? अब, व्यावहारिक रूप से कहें तो, हाँ, हम देख सकते हैं कि शायद न्यायपूर्ण समाज को बनाए रखना यहाँ एक महत्वपूर्ण विचार होगा। लेकिन बाइबल हमें इस बात का एक अलग तर्क देती है कि हम हत्या क्यों नहीं करते। और हम उस तर्क को दस आज्ञाओं में नहीं, बल्कि उत्पत्ति की पुस्तक में पाते हैं।

जो भी इंसान का खून बहाता है। अब, मैं यहाँ एक खास बात पर ध्यान देने जा रहा हूँ। यहाँ पहला शब्द यह है कि, अधिकांश बाइबल अनुवादों में, और शायद सभी बाइबल अनुवादों में भी, क्योंकि मैंने उनमें से बहुत से देखे हैं, इस शब्द का अनुवाद "जो कोई भी" के रूप में किया गया है।

यह शब्द है आशेर, जो एक सापेक्ष सर्वनाम है। हिब्रू में, इसका मतलब या तो एक व्यक्ति हो सकता है या किसी व्यक्ति को संदर्भित कर सकता है। और संदर्भ में, वह जो कर रहा है वह यह है कि वह कह रहा है कि आप, नूह, और सभी मनुष्य, आपको जो कुछ भी आप चाहते हैं उसे मारने और खाने की अनुमति है।

लेकिन जो भी इंसान का खून बहाता है, उसका खून इंसान ही बहाएगा। यह जानवरों द्वारा इंसानों को मारने की बात है। यह इंसानों द्वारा इंसानों को मारने की बात नहीं है।

क्षमा करें, अनुवादकों, अपना होमवर्क करें। लेकिन जानवर लोगों को क्यों नहीं मार सकते? क्योंकि भगवान की छवि में, भगवान ने मनुष्यों को बनाया है। दुनिया में, समाज में हमारा एक विशेष स्थान, एक विशेष भूमिका है।

और क्योंकि हम ईश्वर की छवि धारण करते हैं, इसलिए हत्या की अनुमति नहीं है। हमें अपने भाइयों और बहनों में ईश्वर की छवि का सम्मान करना चाहिए। इसलिए, छठी आज्ञा के पीछे का सिद्धांत, तुम हत्या नहीं करोगे, ईश्वर की छवि के प्रति सम्मान है।

वास्तव में, यही बात है। यीशु भी इसे पहचानते हैं, और यह एक अद्भुत बात है, मेरा मानना है, कि यीशु और मैं इस बात पर सहमत हैं। यीशु एक बुद्धिमान व्यक्ति थे।

इसलिए, मुझे लगता है कि मैं यीशु की कही बातों से सहमत हूँ। ऐसा नहीं है कि उसे इतनी परवाह है, लेकिन मुझे यकीन है कि उसे इस बात की परवाह है कि मैं उसकी कही बातों से

सहमत हूँ। आपने सुना होगा कि प्राचीन लोगों से कहा गया था कि तुम हत्या नहीं करोगे, और जो कोई भी हत्या करता है उसे न्यायालय के समक्ष उत्तरदायी होना होगा।

लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, उसे न्यायालय में जवाब देना होगा। जो कोई अपने भाई से कहेगा, 'तू निकम्मा है, वह सर्वोच्च न्यायालय में जवाब देगा। और जो कोई कहेगा, 'अरे मूर्ख, वह नरक की आग में जाने के लिए दोषी होगा।

लोगों को मूर्ख कहकर, जाहिर तौर पर नरक में अपनी जगह अर्जित की है। यहाँ कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं। पूरे पहाड़ी उपदेश में, यीशु एक उल्लेखनीय साहित्यिक उपकरण का उपयोग करता है, जिसे कम आंका गया है, लेकिन जिसे हम अगली आज़ा में और भी अधिक ध्यान में रखेंगे।

लेकिन उस साहित्यिक उपकरण को हम अतिशयोक्ति कहते हैं। आप जानते हैं, यीशु किसी बात को स्पष्ट करने के लिए अतिशयोक्ति का उपयोग करते हैं। जी हाँ, यीशु एक चतुर व्यक्ति थे, और उन्हें अलंकारों का उपयोग करना आता था।

जाहिर है, किसी को भी अदालत के सामने इसलिए नहीं घसीटा जाएगा क्योंकि उसने अपने दिल में किसी से नफरत की है। सबसे पहले, कोई कैसे जान सकता है कि वह अपने दिल में किसी से नफरत करता है? आप जानते हैं, जब तक कि वह इसे कबूल न कर ले। और कोई भी अपने भाई को मूर्ख कहने के लिए नरक में नहीं जाता।

एकमात्र पाप जो हमें नरक में भेजता है, वह है यीशु मसीह पर विश्वास न करना। तो, हाँ, यह अतिशयोक्ति है। लेकिन यह हमें यह संकेत देता है कि यीशु कह रहे हैं कि हत्या न करने के पीछे का कारण या तर्क सम्मान का तर्क है।

तो, चलिए इसे थोड़ा और आगे बढ़ाते हैं। अपने दिल में किसी से नफरत मत करो। उनके व्यक्तित्व पर नाराज़गी मत करो या उनके व्यक्तित्व को नीचा मत दिखाओ।

किसी को बेकार मत कहो। नहीं, वह व्यक्ति भगवान की छवि रखता है, और आपको उसका सम्मान करना चाहिए। आप किसी व्यक्ति को बेकार नहीं कह सकते।

आप किसी को मूर्ख नहीं कह सकते। मेरा मतलब है, आप ऐसा कर सकते हैं, ठीक है, मेरा मतलब है, हम ऐसा करते हैं। लेकिन अगर हम तकनीकी रूप से इस बारे में सही होने जा रहे हैं, तो आप कह सकते हैं कि किसी ने जो किया है वह मूर्खतापूर्ण है, और यीशु ने खुद कुछ मौकों पर ऐसा किया है, आप जानते हैं।

लेकिन किसी को मूर्ख कहना उसके कामों पर नहीं बल्कि उसके व्यक्तित्व पर हमला करना है। और इसलिए यीशु कह रहे हैं, अपने पड़ोसी में परमेश्वर की छवि का सम्मान करें। उन्हें न मारना यहाँ सिद्धांत का एक विशिष्ट उदाहरण है।

सिद्धांत यह है कि ईश्वर की छवि का सम्मान किया जाए। और इसलिए यीशु यहाँ यही बात बता रहे हैं और हमें बता रहे हैं। इस बात को स्पष्ट करने के लिए फिर से अतिशयोक्ति का प्रयोग किया गया है।

मेरी आँख निकाल दोगे? सचमुच? हाँ, गंभीरता से, हाँ। लेकिन सचमुच, नहीं। यह अतिशयोक्ति है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमें इसे गंभीरता से नहीं लेना चाहिए। इसलिए, यीशु हमें सबसे पहले यही चेतावनी देते हैं कि क्या आप अपने पड़ोसी से नाराज़ हैं? अगर आप नाराज़ हैं और आपको पता है, तो अपने हाथों से ताली बजाएँ। आप गुस्से को कैसे संभालते हैं? जाहिर है, गुस्से को संभालने के कुछ तरीके हैं जो दूसरों से बेहतर हैं।

अब, मुझे लगता है कि मैं यहाँ थोड़ा मनोवैज्ञानिक रूप से बात करूँगा। लेकिन मुझे लगता है कि हम अच्छे क्रोध, तटस्थ क्रोध और बुरे क्रोध के बीच अंतर कर सकते हैं। यीशु कभी-कभी क्रोधित होते थे।

आप जानते हैं, और बाइबल हमें बताती है, गुस्सा करो, लेकिन पाप मत करो। बाइबल मानती है कि गुस्सा हमेशा गलत नहीं होता। और कभी-कभी गुस्सा बहुत अच्छी बात हो सकती है।

अच्छा गुस्सा, अक्सर दूसरों के लिए गुस्सा होता है, जो हमें अच्छे काम करने के लिए प्रेरित कर सकता है जिससे न्याय हो। आप जानते हैं, अच्छा गुस्सा नागरिक अधिकार आंदोलन जैसी चीजों को प्रेरित कर सकता है। जब यीशु ने मंदिर से पैसे बदलने वालों को बाहर निकाला, तो वह अपने लिए नहीं बल्कि अपने पिता के सम्मान को कलंकित करने के कारण नाराज था।

जब हम सुसमाचारों में यीशु को क्रोधित होते देखते हैं, तो इसका संबंध आमतौर पर किसी के द्वारा अपमान करने, या दुर्व्यवहार करने, या लोगों पर बोझ डालने से होता है। जब यीशु पर स्वयं हमला किया गया, तो उन्होंने क्रोध से प्रतिक्रिया नहीं की, यह काफी दिलचस्प बात है। इसलिए, अच्छा क्रोध एक प्रेरक चीज़ है, और एक शक्तिशाली चीज़ है, और इसे केंद्रित किया जा सकता है, और इसका उपयोग किया जा सकता है, और यह हमारी दुनिया में बदलाव ला सकता है।

तटस्थ क्रोध, मैं कहूँगा, तटस्थ क्रोध हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। आप जानते हैं, क्रोध हमारी प्रतिक्रियाओं का एक स्वाभाविक हिस्सा है। यह हमारे अंदर बना हुआ है, और कभी-कभी हम इसे रोक नहीं पाते।

आप जानते हैं, हम ट्रेफिक जाम में फंस जाते हैं, कोई हमें काट देता है। हमारे लिए गुस्से से भड़कना स्वाभाविक हो सकता है। और मुझे नहीं लगता कि इसमें कुछ भी अच्छाई है।

मुझे कहना होगा कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जो यह दिखाना पुण्य का काम समझते हैं कि वे कितना क्रोधित हो सकते हैं। आप जानते हैं, ओह, मैं हर समय बहुत क्रोधित रहता हूँ। यह अच्छी बात नहीं है।

नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं है। आप जानते हैं, मुझे उच्च रक्तचाप है। अब, तटस्थ क्रोध उन दैनिक कुंठाओं के प्रति एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया हो सकती है।

यह जरूरी नहीं कि यह अच्छी चीज हो, लेकिन जरूरी नहीं कि यह बुरी चीज भी हो। कभी-कभी यह हमें अच्छी प्रतिक्रियाएँ करने में मदद कर सकती है। कभी-कभी यह हमें बुरी प्रतिक्रियाएँ करने में भी मदद करती है।

लेकिन क्रोध अपने आप में न तो अच्छा है और न ही बुरा। बुरे क्रोध के बारे में क्या? व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि बुरा क्रोध तब होता है जब हम किसी के किए पर नहीं, बल्कि उसके व्यक्तित्व पर क्रोधित होते हैं। आप जानते हैं? और मेरा मानना है कि यह हमेशा बुरा होता है।

जब भी हम किसी से इसलिए नाराज़ होते हैं क्योंकि उनका रंग अलग है या उनका धर्म अलग है, या हम किसी से इसलिए नाराज़ होते हैं क्योंकि वे अमीर हैं, या हम किसी से इसलिए नाराज़ होते हैं क्योंकि वे गरीब हैं, या हम किसी से इसलिए नाराज़ होते हैं क्योंकि ऐसी कोई दूसरी बात है जो शायद उनके नियंत्रण से बाहर हो या जो उनके मूल व्यक्तित्व का हिस्सा हो, तो वह बुरा गुस्सा है, क्योंकि यही बात नफरत में बदल जाती है। और नफरत की हमेशा बाइबल में निंदा की गई है। जैसा कि हम लैव्यव्यवस्था की किताब में पढ़ते हैं, अपने दिल में अपने पड़ोसी से नफरत मत करो, बल्कि अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्यार करो।

इसलिए हमें किसी को मूर्ख कहने में सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि हम उनके कार्यों के बजाय उनके चरित्र का मूल्यांकन कर रहे हैं, जैसा कि मैंने कहा। बेशक, आप जानते हैं, हम सभी ऐसा करने के लिए प्रवृत्त हैं। मुझे एक बार याद है कि मैं अपने चार साल के बच्चे के साथ अपनी कार के पीछे जा रहा था, और मेरे बच्चे कभी-कभी मेरे उपदेशों को सुनते थे, जो एक डरावनी बात थी, क्योंकि किसी ने मुझे काट दिया, और मैंने कहा, क्या बेवकूफ है ! और मेरा छोटा चार साल का बच्चा कहता है, डैडी, क्या आपका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने जो किया वह एक तरह की बेवकूफी वाली बात थी? और हाँ, वास्तव में, मेरा मतलब है, हमें सावधान रहने की ज़रूरत है, क्योंकि हमें लोगों को एक कार्य से चित्रित नहीं करना चाहिए, आप जानते हैं? हमें किसी को मूर्ख नहीं चित्रित करना चाहिए, क्योंकि उन्होंने एक मूर्खतापूर्ण काम किया है, क्योंकि हममें से कौन उस मानक के तहत निर्दोष होगा, है न? राका, बेकार, है न? कुछ अनुवाद वास्तव में इस अरामी शब्द, राका का उपयोग करते हैं, क्योंकि, आप जानते हैं, यह ग्रीक नहीं है, यह एक अरामी शब्द था।

जो कोई भी अपने भाई से कहता है, राका, और वे इस अरामी शब्द को डालते हैं, हम वास्तव में इसे तल्मूड में काफी बार पाते हैं। इस शब्द का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, और यह उनके पसंदीदा अपमानों में से एक था। और यीशु कहते हैं, नहीं, आपको किसी और को बेकार मानने का अधिकार नहीं है।

और यहाँ मुझे सीएस लुईस के शब्द याद आ रहे हैं, जिन्होंने हमें बताया कि हमें हर उस व्यक्ति के साथ व्यवहार करना चाहिए जिससे हम मिलते हैं, एक संभावित आध्यात्मिक दिग्गज के रूप में। आप जानते हैं, हम नहीं जानते कि किसी के भीतर कितनी क्षमता हो सकती है, भले ही वह

इस समय सबसे खराब परित्यक्त प्रतीत हो। भगवान किसी के साथ भी अविश्वसनीय चीजें कर सकते हैं; चाहे वह कितना भी विकृत क्यों न हो, ईश्वरीय छवि हर व्यक्ति में बनी रहती है, और वह ईश्वरीय छवि हमारे सम्मान की हकदार है।

उन्हें न मारना ही वह न्यूनतम कार्य है जो हम करते हैं। यीशु हमें अधिकतम कार्य करने के लिए कहते हैं, जो कि परमेश्वर की उस छवि का सम्मान करना, परमेश्वर की उस छवि को संजोना, तथा सभी को ऊपर उठाने का प्रयास करना तथा परमेश्वर के लोगों के रूप में उनकी क्षमता को पूर्ण करने में उनकी सहायता करना है।